लॉकडाउन काव्यांजलि



अजय कुमार वर्मा

लॉकडाउन काव्यांजलि

........✍ अजय कुमार वर्मा

प्रकाशक :

अमन पब्लिशिंग हाउस

मधु मार्केट, नवीन बाजार
बुढ़ाना गेट, मेरठ।

प्रकाशक :
अमन पब्लिशिंग हाउस
मधु मार्केट, नवीन बाजार
बुढ़ाना गेट, मेरठ।

लॉकडाउन–काव्यांजलि

प्रथम संस्करण : **अगस्त 2020**

मूल्य : ₹ **70/-**

लेज़र टाइपसेटिंग–डिज़ाइनिंग : **श्री राम कम्प्यूटर्स, मेरठ।**

मुद्रक : **भवानी प्रिन्टर्स, मेरठ।**

सृजन सहयोग : **डॉ० विजय कुमार उमराव**
प्रखर एवं कनक उमराव

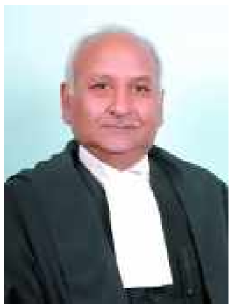
परमपूज्य पिता जी



स्व० श्री शिवलाल
के श्रीचरणों में सादर समर्पित

न्यायमूर्ति संजय मिश्र
लोक आयुक्त,
उत्तर प्रदेश

पोस्ट बॉक्स नं० 172
(जी० पी० ओ०)
टी० सी०-46/वी-1,
विभूति खण्ड
गोमती नगर,
लखनऊ-226 010
दूरभाष : 0522–2728660
0522–2306160
फैक्स : 0522–2306647



सन्देश

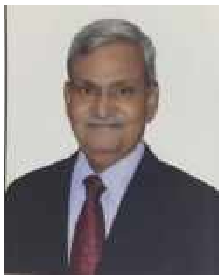
मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि उत्तर प्रदेश लोक आयुक्त प्रशासन के कर्मठ एवं संवेदनशील अधिकारी, श्री अजय कुमार वर्मा, उप सचिव द्वारा रचित काव्य संग्रह ''**लॉकडाउन-काव्यांजलि**'', जिसकी कविताएँ सामाजिक एवं पर्यावरणीय परिवेश को बहुत खूबसूरती से अक्षरश: उद्‌बोधित करती हैं, का प्रकाशन होने जा रहा है। रचनाओं को काव्यरूप में प्रस्तुत कर समाज को मानसिक एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु उनका यह प्रयास सराहनीय एवं हृदयग्राही है। मुझे आशा है कि यह पुस्तक आमजन के लिए बहुत रोचक एवं उपयोगी होगी।

''**लॉकडाउन-काव्यांजलि**'' के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

न्यायमूर्ति संजय मिश्रा

शम्भू सिंह यादव
उप लोक आयुक्त,
उत्तर प्रदेश

पोस्ट बॉक्स नं० 172
(जी० पी० ओ०)
टी० सी०-46/वी-1,
विभूति खण्ड
गोमती नगर,
लखनऊ-226010
दूरभाष : 0522–2306088
फैक्स : 0522–2306647



दिनाँक : 20 अगस्त, 2020

सन्देश

मुझे यह जानकर हर्ष की अनुभूति हुई कि लोक आयुक्त कार्यालय में कार्यरत श्री अजय कुमार वर्मा, उप सचिव द्वारा रचित काव्य संग्रह ''**लॉकडाउन-काव्यांजलि**'', की रचनाएँ सामाजिक एवं पर्यावरणीय परिवेश को चित्रित करती हैं, का प्रकाशन होने जा रहा है। रचनाओं को काव्यरूप में प्रस्तुत कर समाज को मनोवैज्ञानिक एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु यह प्रयास सराहनीय है।

आशा है यह पुस्तक जन सामान्य के लिए बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

इस काव्य संग्रह के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

शम्भू सिंह यादव

दिनेश कुमार सिंह
उप लोक आयुक्त,
उत्तर प्रदेश

दूरभाष : 0522–2728086
फैक्स : 0522–2306647



सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हो रही है कि कार्यालय लोक आयुक्त, उत्तर प्रदेश में कार्यरत श्री अजय कुमार वर्मा, उप सचिव द्वारा रचित काव्य संग्रह '**लॉकडाउन-काव्यांजलि**', जिसकी कविताएँ सामाजिक एवं पर्यावरणीय परिवेश को अक्षरशः उद्बोधित करती हैं, का प्रकाशन होने जा रहा है। रचनाओं को काव्यरूप में प्रस्तुत कर समाज के मनस को सूर्य की किरणों की तरह आशा से भर देने एवं बौद्धिक रूप से सुदृढ़ बनाने हेतु यह प्रयास सराहनीय है। आशा है यह पुस्तक जन सामान्य के लिए बेहद रोचक एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

इस काव्य संग्रह के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

19.08.2020
दिनेश कुमार सिंह

प्राक्कथन

हम लोग अपने मन में चीजों को या तो बढ़ाकर देखते हैं या घटाकर। सत्य को, यथार्थ को, जिस रूप में वह है उस रूप में नहीं देख पाते। अधिकांश समस्याओं की जड़ भी यही है। बहुधा मन करता है कि सत्य देखूँ। सत्य के अलावा कुछ न देखूँ। जिस क्षण मेरे मन में यह इच्छा तीव्रतर होती है, वही मेरी कविता का क्षण होता है।

कविता, विचारों की गहनता के अतिरेक का प्रस्फुटन है। यह शब्दों की एक कलात्मक अभिव्यक्ति है जिससे चित्त किसी रस या मनोवेग से पूर्ण हो। कविता से मनुष्य भाव की रक्षा होती है। कविता की प्रेरणा से मनोवेगों के प्रवाह जोर से बहने लगते हैं। तात्पर्य यह है कि कविता मनोवेगों को उत्तेजित करने का उत्तम साधन है। कविता हमारे मनोभावों को उच्छवासित कर जीवन की नीरसता हरती है। हम सृष्टि के सौन्दर्य को देखकर मोहित होने लगते हैं।

संसार में ऐसा कोई काम नहीं है जो सद्उद्यम से सिद्ध न हो सके, बस आवश्यकता है उत्साह की। इसी उत्साह व मानसिक वेग को उत्तेजित करने के लिए कविता एक उत्तम साधन है।

यहाँ इस बात का जिक्र करना समीचीन प्रतीत होता है कि मेरे मन में कविता लिखने का भाव कब और कैसे जागा? मैं एक कृषक परिवार से हूँ। बचपन से प्रकृति व पेड़-पौधों के प्रति मेरा विशेष लगाव रहा है। सरकार द्वारा प्रतिवर्ष वृक्षारोपण अभियान चलाया जाता है और करोड़ों पौधे रोपे जाते हैं, किन्तु देखरेख के अभाव में वे शीघ्र ही सूख जाते हैं। वर्ष 2016 में वर्षा बहुत कम हुई थी और सूखे जैसी स्थिति उत्पन्न हो गई थी। चारों ओर पेड़-पौधे सूख रहे थे। मेरे घर के पास सड़क के किनारे व डिवाइडर में भी सैकड़ों पौधे वन विभाग द्वारा लगवाये गये थे, जो देख-रेख के अभाव में सूख रहे थे। सूख रहे उन पौधों को देखकर मन विचलित हो जाता था। एक दिन मैंने उन पौधों को सूखने से बचाने का निश्चय किया। सरकारी सेवा में होने के कारण समय का अभाव रहता था। अत: प्रात: जब भी टहलने जाता था तो घर से एक बाल्टी पानी ले जाता और उससे एक या दो पौधों की सिंचाई कर देता था, फिर रास्ते भर में जो भी हैण्डपम्प मिलता उससे पानी निकाल कर कुछ पौधों में डाल देता था। जानकीपुरम स्थित लखनऊ विश्वविद्यालय के द्वितीय कैम्पस के अन्दर हजारों पेड़ लगे हैं, वे सभी सूख रहे थे। वहाँ भी कुछ पौधों में पानी डाल देता था, ताकि वे जीवित बने रहे। जब घर वापस लौटता था तो वही प्रक्रिया दोहराते हुए आता था। इस प्रकार प्रतिदिन 20-25 पौधों में पानी पड़ जाता था। इस पुनीत कार्य में बड़ा आनन्द आने लगा। लोगों ने भी मुझे बहुत उत्साहित किया। धीरे-धीरे इस पुनीत कार्य में बहुत सारे

नवयुवक, छात्र व मुहल्ले के मार्निंग वाकर्स जुड़ गये। सैकड़ों लोगों की टीम बन गई। चूँकि पानी का अभाव था और पौधों को भी जीवित रखना आवश्यक था, अत: बिना किसी हिचक के नालियों में बह रहे वेस्टेज पानी से पौधों की सिंचाई की जाने लगी। जल बचाने के संकल्प को पूरा करने के लिए घर के अनुपयोगी पानी का भी उपयोग पौधों की सिंचाई के लिए करने लगे। हम सब ने मिल कर हजारों पेडों को सूखने से बचाया जो आज हरे भरे हैं। यह पुनीत कार्य आज भी जारी है। सभी पाठकों से निवेदन है कि अपने-अपने ढंग से जल की बर्बादी रोकें, जल संचित करें, सूख रहे अनाथ पौधों को बचायें व कुछ नये पौधे लगायें, उन्हें पालें-पोषें, वृक्ष बनायें और आगे आने वाली पीढ़ी को यह उपहार देकर जायें।

वृक्षों की सेवा के इस पुनीत कार्य के दौरान ही मेरे अन्दर ऐसा भाव जागा कि यदि प्रयास करूँ तो मैं भी कुछ लिख सकता हूँ। वर्ष 2016 से पहले मैंने कभी भी कोई लेख व कविता नहीं लिखी थी। प्रकृति से ही मुझे शब्द मिले व साहस बँधा। मैंने प्रयास किया और वर्ष 2016 में सर्वप्रथम वन्दना, जल + पौध बचायें, दुनिया की रीति, सूर्य देवता, जल-वायु व काया में भगवान समाया आदि कविताओं की रचना की। वर्तमान कोविड-19 विपदा के दौरान जब घर में कैद से हो गये तो खाली समय का सदुपयोग करने का फिर एक बार मौका मिला। प्रकृति एवं समाज से मिली प्रेरणा से अपनी अभिव्यक्तियों को लयबद्ध कर कई और रचनाओं की माला पिरोया। जो आपके समक्ष **लॉकडाउन-काव्यांजलि** के रूप में प्रस्तुत है। कविताओं की भाषा सरल एवं हृदयग्राही है। जिन्हें लोगों ने बहुत पसन्द किया व सराहा है।

''जब मन की वेदना फटती है,
तो कलम उठे या हथियार उठे
कुछ न कुछ उठ जाता है,
जब कलम उठे शब्द मिल जाय,
हथियार उठे तो बल आ जाय।''

मैं आशा करता हूँ कि मेरी काव्य रचनाओं का उपयुक्त स्वागत होगा। जिन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया, समय-समय पर और कवितायें लिखने को प्रेरित किया तथा कविताओं को काव्य संग्रह पुस्तक रूप में लाने को प्रेरित व सहयोग प्रदान किया, मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता व आभार प्रकट करता हूँ।

–अजय कुमार वर्मा

लखनऊ
विक्रम संवत 2077, भाद्रपद-त्रयोदशी
31 अगस्त, 2020, सोमवार

अनुक्रमणिका

कविता	पृष्ठ सं०
1. वन्दना	11–14
2. मात-पिता	15–17
3. पितृ पक्ष	18–19
4. हे! सूर्य देवता नमो नमः	20–22
5. गुरू	23–24
6. काया में भगवान समाया	25–26
7. अध्यात्म और विज्ञान	27–28
8. प्रेम, धैर्य, सन्तोष	29–31
9. बचपन के साथी	32–33
10. यादें	34–35
11. छोटी छोटी बातें	36–37
12. संगति	38–39
13. अक्षर	40–41
14. वर्णमाला	42–43
15. नारी	44–45
16. आशा	46–47
17. धन	48
18. जल-वायु	49–50
19. जल	51–52
20. जल + पौधे बचाएँ	53–55
21. स्वास्थ्य	56–57
22. साइकिल	58–59
23. सावधान!	60–61

24.	मन	62–63
25.	फूल	64–65
26.	विपदा	66–68
27.	कोरोना	69–70
28.	भ्रष्टाचार	71–72
29.	महात्मा गाँधी	73–75
30.	उद्धार	76–77
31.	दुनिया की रीति	78–80

✦✦✦✦✦

1

वन्दना



प्रथम वन्दना ईश्वर की,
जिसने यह संसार रचा।

दूसरी वन्दना माँ धरती की,
जो सबको गोद उठाये है,
सब का भार उठाये है।

तीसरी वन्दना मात-पिता की,
जिनने हमको जन्म दिया, व
पाल-पोष कर बड़ा किया।

अगली वन्दना दादा-दादी, नाना-नानी, व
दोनों कुलों के अन्य जनों की,

जिनने पहले चिढ़ाया, खूब रुलाया,
गोदी उठाया, घुमाया फिराया,
प्यार किया, दुलार किया,
अंगुली पकड़ कर चलना सिखाया,
फिर अपने पैरों खड़ा किया।

अगली वन्दना उन भैया-बहना,
सखा-सखी, ग्वालबालों की,
जिनके संग,
लगड़-झगड़ खेला बचपन, व
खाये मइया के थप्पड़।

अगली वन्दना गाँव-मुहल्ले के
उन स्वजनों की, उन अपनों की,
जिनने पहले देख के गलती,
डाँटा है, फटकारा है,
फिर प्यार से थप्पड़ मारा है।

अगली वन्दना गुरु चरणों की,
जिनने हमको शिक्षा दी, दीक्षा दी,
मानवता का पाठ पढ़ाया,
जीवन का सार बताया, व
आगे की राह दिखाया।

अगली वन्दना सास-ससुर, व
अन्य सभी ससुराली जन की,
जिनने कन्या दान किया,
मान दिया, सम्मान दिया, व
डोली बिठाकर विदा किया।

अगली वन्दना तीनों कुलों के,
मित्रों, नाते-रिस्तेदारों की,
जिनका प्यार मिला, स्नेह मिला,
सद्‌भाव मिला, आशीर्वाद मिला, व
जीवन में सहयोग मिला।

प्रेम के पुष्प समर्पित,
पत्नी को,
जिनके मिलन से,
घर के अंगना,
नन्हें-नन्हें, सुन्दर-सुन्दर
दो पौध उगे,
उन पौधों को आशीर्वाद,
जीवन में खूब फूलें-फलें व
सब को देवें छाँव,
अपनी मेहनत और लगन से,
छुवें गगन, छुवें गगन।

अगली वन्दना उन अपनों की,
जो बिन कारण अपनों से रूठे हैं,
स्वजनों से रूठे हैं,
हम उन्हें मनाने के लिए,
नत मस्तक हैं, नत मस्तक हैं।

अगली वन्दना उन गृहों, झोपड़ियों,
खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों,
ताल-तलैया व अन्य सभी जल दाोतों की,
जिनने हमको छाँव दिया,
रहने का स्थान दिया,
अन्न दिया, फल-फूल दिया,
नहलाया-धुलाया व पीने का नीर दिया।

अगली वन्दना उन पशु-पक्षी, व
अन्य सभी जीवों की,
जिनने घर-आँगन गुलजार किया,
जिनसे हमने प्यार किया, व
जीवन में सहयोग लिया।
जीवन के इस रस्ते में,
जिन-जिन का सानिध्य मिला,
उन सबको बारम्बार प्रणाम करूँ।
न्योछावर वन्दनवार करूँ।

✦✦✦✦✦

2

मात-पिता



माँ की गोद में,
कोई नर, कोई नारी वेश में आकर,
भाई–बहन का नाता पाता।
बचपन माँ की गोदी में,
मनभावन लोरी सुनता,
छोटी छोटी बातों में ही,
रोता और झगड़ता रहता।
समयचक्र के साथ ही,
बचपन आगे बढ़ता जाता,
धीरे–धीरे कदम बढ़ाता,
दो राहों में बट जाता।

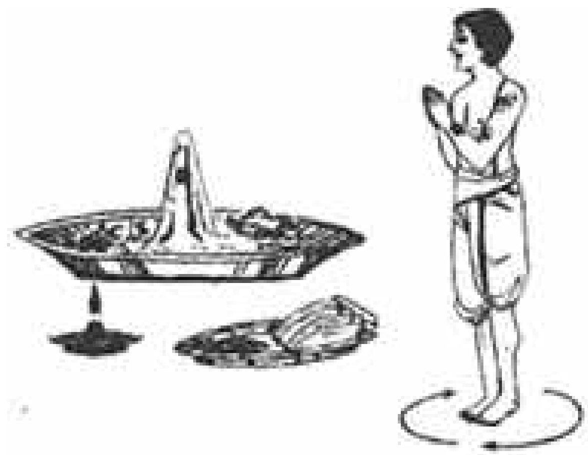
भाई तो मात-पिता के,
आँगन रह जाता,
बहना को डोली में बैठा,
कोई और संग ले जाता।
हर कोई जीवन भर,
भिन्न-भिन्न किरदार निभाता,
जिससे जैसा नाता जुड़ता,
उससे वैसा नात निभाता।
यौवन छूते,
मात-पिता बन जाते,
इस किरदार में तो वे,
ममता की छाँव होते।
अपनी तुतली बानी से,
जब मनभावन गीत सुनाते,
या शिशु की तुतली बातें सुनते,
वो जीवन के सुहाने क्षण होते।
कितनी भी संताने हों,
ममता में कोई भेद न करते,
सबको एक माला में ही,
मणियों की भाँति पिरोये रहते।
मन को लगने वाली बातें भी,
हंस-हंस कर सहते रहते,
गम के आँसू पीते रहते,
खुशी के आँसू रोते रहते।

उनकी धन सम्पदा का,
मोल तो लग जाता,
पर ममता का मोल,
न कोई दे पाता।
बचपन में तो संतानें,
भोजन से मुँह फेरा करतीं
समय बदलते ही वो,
भोजन देने में मुँह फेरा करतीं।
पौधा हो या संतानें,
ज्यों-ज्यों ऊँचाई बढ़ती जाती,
मात-पिता या धरती से,
बीच की दूरी बढ़ती जाती।
पौधा तो जीवन भर,
धरती से जुड़ कर रहता,
क्षण भर भी भूखा न रखता,
फल-फूल चढ़ाता ही रहता।
पर मानव तो,
अपना कर्त्तव्य भूलता जाता,
हे! भगवन् मानव को भी,
ऐसी ही सद्बुद्धि क्यों नहीं देता?
धन्य-धन्य हैं वो सन्तानें,
जो वृद्धों व असहायों के प्रति,
पौधों की भाँति ही,
अपना कर्तव्य निभाते हैं।

✦✦✦✦✦

3

पितृ पक्ष



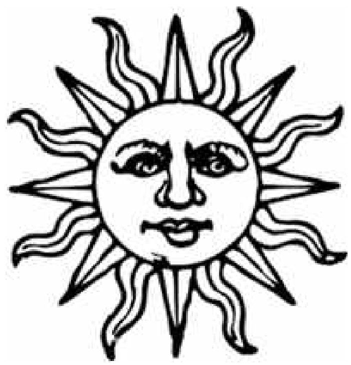
हर वर्ष एक पखवारा,
पितरों का भी होता है,
जो पितृ पक्ष कहलाता है, व
उन पुरखों की याद दिलाता है,
जो बिन बोले ही चले गये,
दुनियादारी छोड़ गये,
व नाता रिश्ता तोड़ गये,
जाते समय कोई समझ न पाया,
किस बात को ले के वो रूठ गये,
क्यों बिन बोले ही चले गये?
आज तलक कोई जान न पाया,
वो कहाँ गये व किधर गये?

जब मुट्ठी बाँधे आये थे,
क्यों मुट्ठी खोले चले गये?
सब रिश्ते-नाते तोड़ गये,
बस यादें अपनी छोड़ गये।
श्रद्धासुमन उन्हें समर्पित,
जो स्वजनों को छोड़ चले गये।

✦✦✦✦✦

4

हे! सूर्य देवता नमो नमः



हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

तुम तो हो ईश्वर प्रतिनिधि,
तुम जैसा दूजा न कोय,
तुमहीं हो उजियारा के दाोत,
कभी अँधेरा लाते हो,
कभी उजेरा लाते हो,
कितनी भी अँधेरी रातें हों,
तुमहीं सवेरा लाते हो।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

तुमहीं हो ऊर्जा के स्रोत,
अग्नि के जलने,
पवन के चलने, व
जल के बहने का कारण,
तुमहीं हो, तुमहीं हो,
चाहे होवे सर्दी, गर्मी
या फिर होवे ऋतुराज बसन्त,
सब का कारण तुमहीं हो।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

तुमहीं हो रंगों के दाोेत,
तुम्हरे कारण सृष्टि रंग बिरंगी है,
तुमसे ही जीवों के अंगों को भी,
मिला है कोई न कोई रंग,
हर किरण में छिपे हुए हैं सात रंग,
जब प्रिज्म में पड़ती किरण तुम्हारी,
सातों रंग बिखर जाते,
जब बन जाता इन्द्र धुनष,
तब सातों रंग निखर आते।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।
समय के भी तुम पालक हो,
समय से ही तुम जगते हो,
समय से ही तुम सोते हो, फिर,
समय से ही जग जाते हो,

प्रातः तुम मुस्काते हो,
दुपहरी में गर्माते हो,
संध्या समय मुर्झाते हो,
फिर समय से ही सो जाते हो,
प्रातः फिर जग जाते हो।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

जब करते हो उत्तर की यात्रा,
उत्तरायन कहलाते हो,
जब करते दक्षिण की यात्रा,
दक्षिणायन कहलाते हो,
जब दिन में ही
बिन बादल छिप जाते हो,
सूर्य ग्रहण कहलाते हो।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

तुम्हरी महिमा पुरखे खूब समझते थे,
तभी तो केवल,
लज्जा के अंग ही ढकते थे,
शेष बदन खुला रखकर,
सीधे सम्पर्क में रहते थे, और
सदा निरोगी रहते थे।
हे! सूर्य देवता नमो नमः,
हे! सूर्य देवता नमो नमः।

✦✦✦✦✦

5

गुरू



गुरू का गुरू, गुरू होता,
गुरू का गुरू किताब।
किताब का गुरू ज्ञान होता,
ज्ञान का गुरू अनुभव।
अनुभव का आधार प्रकृति होती,
प्रकृति ही सबकी गुरू होती।

सबकी पालनहार प्रकृति होती,
हर गुण प्रकृति छिपाये रहती।
प्रकृति तो सेवक के सम्मुख ही,
अपना भेद खोलती।

जो प्रकृति के साथ जुड़ा रहता,
वही प्रकृति को पढ़ सकता।
जिसने भी पढ़ा प्रकृति को,
निकट भगवन के पाया खुद को।
प्रकृति तो बिन माँगे ही,
सब कुछ देती रहती।
जब क्रोधित हो जाती,
सब कुछ वापस ले लेती।

✦✦✦✦✦

6

काया में भगवान समाया



भगवन् तूने खूब भटकाया,
बिन गुरू राह ढूँढ न पाया।
जब शरण गुरू की आया,
तब गुरुवर ने यह राज बताया,
कि बिन भगवान बनत नहिं काया,
मिलि भगवान बनत यह काया।
काया में भगवान समाया,
उसे बाहर मत ढूंढो मेरे भाया।
गुरुवर ने ही यह भी बताया-
भ—का मतलब भूमि, पृथ्वी
ग—का मतलब गगन, अकाशा
व—का मतलब वायु, समीरा
अ—का मतलब अग्नि, पावक

न—का मतलब जल या नीर।
यहि पंच तत्व मिलि बना शरीर।
जब ये सब एकजाइ हो जावें,
तब सब मिलि भगवान कहावें।
जब अलग-अलग हो जावें,
आपन-आपन नाम कमावें।

इन पंच तत्व में
भूमि होती सबसे भारी,
तासे हल्का नीर,
नीर से हल्की अग्नि,
अग्नि से हल्की वायु,
गगन होत सबसे हल्का,
तबहिं यह ऊँचे बसता।

✦✦✦✦✦

7

अध्यात्म और विज्ञान



औरों के बारे में जानना,
इंसानी प्रवृत्ति होती है,
स्वयं के बारे में न जानना भी,
इनकी प्रवृत्ति होती है।
स्वयं को जानने की प्रक्रिया ही,
साधना होती है,
जैसे नर्सरी की कक्षाओं में,
प्रतीकों का सहारा लिया जाता है,
वैसे ही साधना की शिक्षा में,
मूर्तियों का सहारा लिया जाता है।

स्वयं को जानना ही,
अध्यात्म होता है,
अध्यात्म ही तो है, जो
सुखमय जीवन जीने का ढंग बताता है,
व मोक्ष की ओर ले जाता है।

प्रकृति के कार्य करने का ढंग,
जानना ही विज्ञान होता है,
जो विकास की ओर ले जाता है।
अध्यात्म हो या विज्ञान हो,
दोनों से खिलवाड़ विनाश लाता है।

✦✦✦✦✦

8

प्रेम, धैर्य, सन्तोष



ईश्वर धन–दौलत तो,
बहुतों को देता है,
पर प्रेम, धैर्य, सन्तोष
जे बिरले को ही देता है।
प्रेम, धैर्य, सन्तोष
ये होते निर्दोष,
बिन इनके,
तन–मन में रहते दोष ही दोष।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो किसी कमी का अहसास नहीं होता,
पर यह न हों,
तो कमी ही कमी का अहसास होता है।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो टूटे-फूटे संसाधन भी,
सुखदायी लगते हैं,
ये न हों तो,
अच्छे से अच्छे संसाधन भी,
दुःखदायी लगते हैं।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो हर रिश्ता,
फूलों सा सुन्दर लगता है।
ये न हों तो,
हर रिश्ता,
कांटों सा चुभता है।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो भूखे पेट भी,
गहरी नींद आती है।
ये न हों तो,
कितना भी पेट भरा हो,
फिर भी नींद नहीं आती है।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो अमावस्या की रात भी,
पूर्णिमा की रात लगती है।
ये न हों तो,
पूर्णिमा की रात भी,
अमावस्या की रात लगती है।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों,
तो झोपड़ियाँ भी,
सुखदायी लगती हैं।
ये न हों तो,
बड़ी-बड़ी हवेलियाँ भी,
दुःखदायी लगती हैं।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष हों तो,
बिन पूजा ही
भगवन मिल जाते हैं।
ये न हों तो,
हर पूजा बेमतलब होती है।

प्रेम, धैर्य, सन्तोष ही,
हैं सुखमय जीवन के आधार,
बिन इनके, जीवन बेकार।

✦✦✦✦✦

9

बचपन के साथी



हममें से बहुतों ने,
बीसवीं सदी के उन दशकों में,
अपना बचपन खेला था।
जब कुछ बच्चों के ही,
पूरे तन में कपड़े होते थे,
व पैरों में जूते चप्पल होते थे।
कम ही बच्चे ऐसे होते थे,
जिनके दो जोड़ी कपड़े होते थे,
पर था इतना प्रेम भाव,
कि बिन भेदभाव के ही,
एक संग खेला करते थे।

फट जाती थीं पैर बिवाइयाँ,
फिर भी दर्द समेटे,
बिन जूता चप्पल के,
जंगल-जंगल घूमा करते थे।
आपस में लड़ते झगड़ते भी,
पर बैर भाव न रखते थे।
संगी साथी के पैरों में,
कांटा चुभ जाने पर,
बिसार के सारी बातें,
एक दूजे के पैरों का,
कांटा से कांटा निकाला करते थे।
एक दूजे का दु:ख दर्द बटाने को,
हरदम आतुर रहते थे।
अब तो आया ऐसा जमाना,
कि बदल गये बच्चों के बचपन,
बदल गयीं सबकी सोचें,
बदल गयीं सब बातें।
बस शेष रहीं,
बचपन की यादें, छुटपन की यादें।

✦✦✦✦✦

10

यादें



क्षणभर को सही,
चलो, बचपन की यादों में डूबा जाए।
यादों-यादों में सही,
गर्मी की भरी दोपहरी में,
बागों में मित्रों संग,
पेड़ों की डालों से कूदा जाए।

होकर बेखौफ लुकाछिपी, कोड़ेबाजी
व गुल्ली-डण्डा खेला जाए।
सावन के सुहाने मौसम में,
बागों में झूले डाले जाएँ।
बारिश के बहते पानी में,
कागज की नाँव बहाई जाए।

-अजय कुमार वर्मा

दीवाली और दशहरे में,
सज-धज कर मित्रों संग,
मेला देखे जाएँ।
होली में फगवारों के संग,
गली-गली में नाच-नाच कर,
खूब धूम मचाई जाए।

ये तो यादें हैं, यादों में क्या?
यादें तो यादें ही होती,
यादों को जितना याद करें,
उतनी ही यादें आती।

यादों को विस्मृत कर देखें,
अब नहीं रहीं फगवारों की टोली,
न ही बचे हैं ताल-तलैया
न ही बचे बगीचे।
आओ सब मिल,
यादों की याद में,
विलुप्त हुए तालाबों को,
उनका रूप दिला दें।
जीवन में कुछ वृक्ष लगाकर,
पाल-पोष कर बाग बना दें।
बना के फगवारों की टोली,
होली में फिर से धूम मचा दें।
क्षण भर को सही,
आओ, बचपन की यादों में डूबा जाए।

✦✦✦✦✦

-अजय कुमार वर्मा

11

छोटी छोटी बातें



पोथी, साहस, धैर्य, नम्रता,
जो जन रखता पास,
उसको आगे बढ़ने से
नहिं रोक सके धरती–आकाश।
हर मानव में भरा पड़ा,
साहस, धैर्य, नम्रता का भण्डार,
जब तक न झांके भीतर,
न जानि सके भण्डार।
धैर्य और साहस सीखें
उन मेहनतकश पथिकों से,
जो भूखे प्यासे चले आ रहे,
पैदल ही हजारों मीलों से।

-अजय कुमार वर्मा

जन जिस क्षण नम्र भाव रखता,
कुछ न कुछ पाया करता,
जिस क्षण क्रोध भाव रखता,
कुछ न कुछ खोया करता।
है जो भी जड़, चेतन, जंगम,
वो सब होत किताब,
पर बिन नजर गड़ाये,
समझ न आवै राज।
पोथी-पोथी छिपा पड़ा,
कोई न कोई राज,
पर बिना पढ़े पोथी,
नजर न आवै राज।
पोथी को ही मूरत समझो,
पोथी को ही पूजा,
पोथी को बिन पढ़े न छोड़ो,
जानो उसकी असीम महत्ता।

✦✦✦✦✦

12

संगति



किसी की संगति करने से पहले,
मन में कर लें खूब विचार।
संगति का जीवन में
पड़ता बहुत प्रभाव।

जीव और वनस्पति ही क्या,
खनिज, जल, मिट्टी, समीर भी,
इससे नहीं अछूते हैं।

काल रूप विषधर जब तक,
चन्दन के सानिध्य में रहता,
शान्तचित्त ही रहता।

जल की प्रवृत्ति,
नीचे को बहने की होती,
वायु की,
ऊपर को उठने की होती,
मिट्टी की,
स्थिर रहने की होती।
मिट्टी जब,
जल की संगति में होती,
या तो घुलकर गहरे जाती,
या फिर कीचड़ बन जाती।
मिट्टी जब,
वायु की संगति में होती,
उड़कर आसमान छू लेती।

कोई कितना ही स्वच्छ धवल हो,
कोयले की संगति में,
कालिख लग ही जाती।
संगति तो संगति होती,
अपने रंग में रंग लेती।
संगति के बारे में,
सदा करें विचार।
सद्संगति से ही
आते उच्च विचार।

✦✦✦✦✦

13

अक्षर



मैं अजर हूँ,
अमर हूँ
ऊँ ध्वनि का वंशज हूँ,
अन्तर्मन में रहता हूँ,
जैसा भाव जगता है,
वैसा शब्द बनता हूँ।
अभिव्यक्ति रूप में,
कभी बाहर आ जाता हूँ,
कभी मन में रह जाता हूँ।
जब तक मन में रहता हूँ,
मन के वश में रहता हूँ,
आते ही बाहर,
पराया हो जाता हूँ,
पराया होता रहता हूँ,
आगे बढ़ता रहता हूँ।

ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता हूँ,
निज अभिप्राय खोता जाता हूँ,
मैं तो जैसा निकला था,
वैसा ही होता हूँ,
बस अभिप्राय
बदलता रहता हूँ।
निज शक्ति से,
किसी को जोड़ देता हूँ,
किसी को तोड़ देता हूँ,
किसी को अस्त्रों से भी ज्यादा,
गहरा घाव देता हूँ,
कभी अभिशाप बनता हूँ,
कभी वरदान बनता हूँ,
कभी गीत बनता हूँ,
संगीत बनता हूँ,
था जिस भाव से उपजा,
वही परिणाम देता हूँ।
मैं कोई और नहीं,
बस एक छोटा सा,
अक्षर हूँ, अक्षर हूँ।

✦✦✦✦✦

14

वर्णमाला



स्वरों में,
अ, इ, उ ह्रस्व रूप कहलाते,
आ, ई, ऊ दीर्घ रूप बन जाते।

बिन्दी की महिमा,
होती बड़ी निराली,
स्वर में तो केवल ऊपर,
व्यंजन में आगे, ऊपर, नीचे
तीन दिशाओं में लग सकती।
बिन्दी जिस माथे लग जाती
उस माथे की शोभा बढ़ जाती।
जब अ के माथे लग जाती,
अ को अं बना देती।

अक्षरों में, अक्षर
र, म की महिमा होती सबसे न्यारी,

इनमें र को तो,
ऊपर, नीचे, आगे, पीछे
चारों दिशाओं में,
रहने का वरदान मिला।

दिशा देखकर अर्थ बदलने का भी,
है इसको वरदान मिला।
हलन्त लगा 'र्',
जिस भी अक्षर के पीछे चलता,
उच्चारण होने पर,
उस आगे वाले अक्षर के माथे चढ़,
उसकी शोभा बन जाता।

'म' में अं मिश्रित रहता,
उच्चारण में अं ही तो सीधे,
माथे में झंकार मारता।
म से ही ममता बनता,
ममता से ही माँ।
जन्म-मरण में भी,
वो शामिल रहता।

र, म की इसी महिमा के कारण,
इनको सबसे ऊँचा स्थान मिला।
जब आपस में जुड़ जाते,
राम नाम पा जाते,
राम नाम पाते ही,
महिमा मन्डित हो जाते।

✦✦✦✦✦

15

नारी



ऐ मेरे देश की नारी,
अब बन के रहो न बेचारी।
मात-पिता का मान हो तुम,
नाते-रिश्तों की शान हो तुम।
ममता की मूरत हो तुम,
वृक्ष नहीं धरती हो तुम।
आसमान में दिखने वाली,
चन्दा जैसी शीतल हो तुम।
सागर जैसी शान्तचित्त, व
हो धैर्यवान-बलशाली तुम।
मेंहदी के पत्तो में जैसी,
छिपी हुई रंगत हो तुम।

हर दु:ख सहने की
शक्ति रखती हो तुम।
अवसर पड़ जाने पर,
चण्डी का रूप भी धरती हो तुम।
राख के नीचे,
दबी हुई अग्नि हो तुम।
जल की तेज धार में जैसी,
छिपी हुई शक्ति हो तुम।
शब्द नहीं अर्थ हो तुम,
गाड़ी का एक पहिया हो तुम।
राष्ट्र की आधी आबादी हो तुम,
उसकी शक्ति का दाोत हो तुम।
फिर भी इस निर्मम समाज में,
बेची और खरीदी जाती हो तुम।
ऐ मेरे देश की नारी!
खुद को पहचानो तुम।
जब तक खुद को,
न पहचानोगी तुम।
तब तक यूँ ही जुर्म
और अपमान सहोगी तुम।

✦✦✦✦✦

16

आशा



तिमिर जब हो आतुर,
मिटाने को सब कुछ,
तो एक नन्ही किरण भी,
सामर्थ्य लड़ने का रखती।

बन कर अंधेरा,
जब छा जाये निराशा,
तो खो कर,
अतीत के सुनहरे क्षणों में,
ढूँढ लो मन में,
एक छोटी सी आशा।

-अजय कुमार वर्मा

आशा ही है,
जो हर राह खोजती,
व उन राहों में चलने का,
साहस भर देती।

तो फिर
व्यर्थ करो न अपनी ऊर्जा,
रहके निराश भावों में,
मोड़ दो अपनी सारी ऊर्जा,
आशा के भावों में।

आँखों में मंजिल का दृश्य लिए,
मन में आशा का भाव भरे,
चींटी की तरह ही साहस से,
चल पड़ो कटीली राहों में।

✦✦✦✦✦

17

धन



दान, भोग व संचय,
ये तीनों धन की गतियाँ होती हैं।
धन का मौलिक गुण होता,
पराया होकर ही, वो फल देता।
धन तो धन ही होता,
वो अच्छा बुरा नहीं होता,
अच्छा बुरा तो उसके,
आने जाने का पथ होता।
उसके आने जाने का जैसा पथ होता,
वैसा ही उसका फल होता।
अधिकता हो या निर्धनता,
दोनों में ही वो चैन हरता,
जरूरत भर का ही,
धन चैन देता है।

✦✦✦✦✦

18

जल-वायु



एक-एक बूँद जल मिलकर,
भर जाता गागर-सागर।
एक-एक पौध मिलकर,
बन जाता वन-उपवन।
जल-उपवन ही जीवन आधार,
बिन इनके जीवन बेकार।
तो आओ सब मिल,
जल की कुछ बूँद बचायें।
फिर बची हुई उन बूँदों से,
प्यासों की प्यास बुझायें।
जल व पौधों के संरक्षण में ही,
हम सबका भी रक्षण हैं।

इनके रक्षण व संरक्षण का ही,
जीवन का लक्ष्य बनायें।
कर इनका संरक्षण,
अपना कर्तव्य निभायें।
यदि समय के रहते न चेते,
तो हम सब रोयेंगे, पछतायेंगे।
आने वाली पीढ़ी को फिर,
कौन सा मुँह दिखलायेंगे।
भले रास्ते अलग अलग हों,
पर मिशन एक हो, लक्ष्य एक हो,
मिलकर जल व वृक्ष बचाना है,
धरती हरी बनाना है,
जल-वायु शुद्ध बनाना है,
जन जीवन सुखमय बनाना है।

✦✦✦✦✦

19

जल



जन-जीवन के पोषण निमित्त,
मैं भी हूँ ईश्वर की रचना।
धरा गर्भ में,
है सीमित भण्डार मेरा।

कभी वाष्प, कभी हिम,
कभी जल रूप में रहता,
जैसा ताप मिलता,
वैसा रूप धरता।

हर प्राणी और वनस्पति का,
मुझ पर है अधिकार बराबर,
पर दम्भी मानव तो बस,
अपना ही अधिकार समझता।

स्वार्थ में अंधा होकर,
अन्धाधुन्ध दोहन करता रहता,
हर राह में मेरी,
रातों-दिन जहर घोलता रहता।

मुझमें तो जो भी घोला जाता,
सब को धारित करता रहता,
हर भोगी को बिन भेदभाव,
निरन्तर न्योछावर करता रहता।
टेढ़ी-मेढ़ी राहों से चल,
सागर में मिलता रहता,
वहाँ हिलोरें मार-मार कर,
चन्दा किरणों से खेला करता।
सागर से वाष्प रूप में,
निरन्तर उड़ता रहता,
फिर धर जल रूप,
धरा में वापस आ जाता।

मैं तो निरन्तर उसी राह चलकर,
सबका पोषण करने आता-जाता रहता,
अंधियारा हो या उजियारा,
बिना रुके चलता ही रहता।

ऐ दम्भी और स्वार्थी मानव,
असीमित दोहन बन्द करो,
जहर मिलाना बन्द करो,
आगे आने वाली अपनी पीढ़ी,
और निरीहों पर तो कुछ,
दया करो, दया करो।

✦✦✦✦✦

20

जल + पौध बचायें



आओ विचारें,
देखें प्रकृति की ओर,
जिसकी मार से,
पशु, पक्षी व मानव,
तड़प रहे चहुँ ओर।
देख वेदना इन सबकी,
आओ मिलकर संकल्प करें,
सबको पौध लगाना है
जल + पौध बचाना है,
धरती हरी बनाना है,
पर्यावरण बचाना है।

तो आओ इसके लिए,
एक छोटा सा काम करें,
सर्वप्रथम,
रोकें जल की बरबादी,
फिर रख मितव्ययिता का भाव,
अपने ही हिस्से के जल का,
उपभोग करें, उपभोग करें,
हर वर्ष लगायें कुछ पौधे,
फिर संचित किये जल से,
उन्हें जिलायें, उन्हें बचायें
पालें-पोषे-बड़ा करें।
यदि पौध लगाने में हो कठिनाई,
तो एक दूजा काम करें,
बन जायें उन पौधों के माली,
जिनका कोई माली न हो,
फिर संचित किये गये जल से,
उन्हें जिलायें, उन्हें बचायें,
पालें-पोषें बड़ा करें।

आते जाते उस रस्ते,
श्रद्धा से उन्हें निहारा करें,
बदले में उनसे न चाहें कुछ,
वो तो खुद रह करके धूप में,
औरों को देते छाँव,

जब तक उनमें जीवन रहता,
कुछ न कुछ देते रहते,
खण्ड-खण्ड हो जाने पर भी,
वो उपयोगी रहते,
तो आओ सब मिल,
पौध लगायें, पौध लगायें,
उन्हें जिलायें, उन्हें बचायें
पालें-पोषें-बड़ा करें,
जब मन अशान्त व विचलित हो,
रह उनके सानिध्य में,
पाँवे माँ के आँचल जैसी,
ठण्डी-ठण्डी छाँव रे,
ठण्डी-ठण्डी छाँव रे।

✦✦✦✦✦

21

स्वास्थ्य



प्राणि जगत में मानव का,
होता सबसे ऊँचा दर्जा,
सुखमय जीवन के खातिर,
जलवायु, खनिज, वनस्पति होता।
तन-मन का स्वास्थ्य सदा,
जीवनचर्या पर निर्भर करता,
जैसी जीवनचर्या रहती,
वैसा स्वास्थ्य बना रहता।

जैसा सूर्य, गगन, चन्दा
व धरती का नाता रहता,
वैसा ही भोर, भोजन, श्रम
व विश्राम का भी नाता रहता।

जब तक इन सबका,
सन्तुलन बना रहता,
तन–मन स्वस्थ बना रहता
नहिं कुछ न कुछ रोग लगा रहता।
अब तो सबकी देखा देखी,
बदल गये हैं सब रोग,
मनुष्यों को भी हो रहे,
पशु पक्षी के रोग।

✦✦✦✦✦

22

साइकिल



होती तो हैं बहुत सवारी,
पर साइकिल होती सबसे न्यारी।
हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी,
ये सब होती महंगी सवारी।
हाथी, घोड़ा, मोटर गाड़ी,
बिन ईंधन न चल पाती।
ये जिस जिस रस्ते चलती हैं,
बहुत प्रदूषण करती हैं।
साइकिल ही एक सवारी है,
जो बिन ईंधन के चलती है।
न तो ज्यादा जगह घेरती,
न ही प्रदूषण करती है।
यह तो चालक के ही,
बल पौरुष से चलती है।

-अजय कुमार वर्मा

जैसा होता चालक,
वैसी रफ्तार पकड़ती है।
तीन जनों के ढोने की,
इसमें भी क्षमता होती है।
कमरे में यदि जगह न हो,
तो छत पर भी चढ़ जाती है।
यही सवारी ऐसी है,
जो घर-घर पाई जाती है।
पहले हर बच्चे के हाथों,
साइकिल ही थमाई जाती है।
रोगों के उपचार में भी,
साइकिल चलवाई जाती है।
अपनी महत्ता के कारण ही,
यह दुनिया में सराही जाती है।

✦✦✦✦✦

23

सावधान!



ऐ दम्भी मानव! देख बानगी
तूने क्या-क्या है कर डाला।
नदियों में डाल-डालकर कचरा,
जल को दूषित कर डाला।
तोड़-तोड़ कर शिखरों को,
उनकी पहचान मिटा डाला।
काट-काट कर वृक्षों को,
बिहंगों को बेघर कर डाला।

सागर तक में भी तूने,
कंकरीट की राह बना डाला।
खोद-खोद कर धरती को,
खनिजों का दोहन कर डाला।
डाल-डाल कर तेज रसायन,
खेतों को प्रदूषित कर डाला।
भेज-भेज कर अनगिनत उपग्रह,
गगन प्रदूषित कर डाला।
जगह-जगह धरती पर तूने,
कंकरीट की परत बिछा डाला।
बिन सोंचे समझे, स्वार्थ में,
तूने प्रकृति नष्ट कर डाला।
छिपकर विकास की आड़ में,
तूने क्या-क्या है कर डाला।
ऐ दम्भी मानव!
हो जा अब भी सावधान!
नहीं बचाया प्रकृति को, तो
जीवन में होंगे व्यवधान ही व्यवधान।

✦✦✦✦✦

24

मन



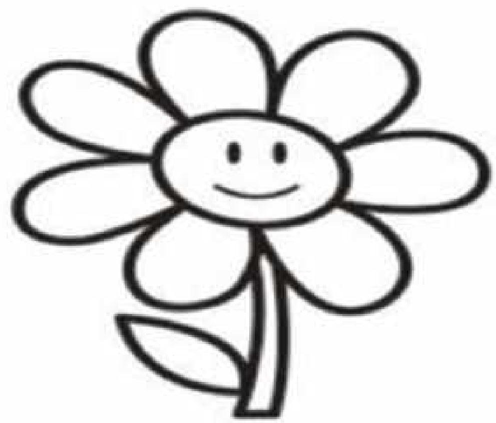
मन तो बड़ा चंचल होता,
प्राणों के संग-संग रहता।
मन कुछ और नहीं होता,
समय का ही प्रतिफल होता।
मन ही हंसता, मन ही रोता,
बिन मन कोई काज न होता।
जब डायफ्राम की संगति में होता,
चेहरा खिला-खिला रहता।
ज्ञानी तो बड़ी जतन से,
मन की गति रोका करता।

आँख की पुतली व स्वाँसों से,
मन का गहरा नाता होता।
जब तक पुतली स्थिर रहती,
चंचलता मन की रुकी रहती।
जब-जब स्वाँस रुकी रहती,
तब-तब मन की गति ठहरी रहती।

✦✦✦✦✦

25

फूल



हर फूल में बीज छिपे रहते,
हर बीज में फूल छिपे रहते।
फूल तो हैं पौधे की आत्मा,
जो प्रकृति की गोद में खिलते।
फूल सुहाने सबको भाते,
अपना–अपना भाग्य वो पाते।
कुछ तो रहते निबट अकेले,
कुछ रहते काँटों के घेरे।
कुछ असमय मुरझा जाते,
कुछ आँधी तूफां में झड़ते।
कुछ देवों के चरणों चढ़ते,
कुछ मालाओं में गुथते।

-अजय कुमार वर्मा

कुछ तो बनकर इत्र महकते,
कुछ औषधियाँ बन जाते।
कुछ डोली के संग जाते,
कुछ अर्थी के संग चलते।
कुछ तो शौकिया तोड़े जाते,
कुछ पैरों से कुचले जाते।
फूल तो डाली में ही,
खिलते व सुन्दर लगते।
फूलों की होती यही जीवनी,
कुछ ने ही अपनी खुशबू बाँटी।
कुछ को जग में मान मिला,
कुछ को बस अपमान मिला।
कुछ तो असमय गिरे–झरे,
कुछ ही फिर से बीज बने।

✦✦✦✦✦

26

विपदा



विपदा जब भी आती,
पहले एक वचन में आती,
फिर धीरे से वो,
बहुवचन रूप धर लेती।

बन बीमारी वर्तमान विपदा भी,
पहले एक देश में आयी,
बढ़ते-बढ़ते अब तो,
है सम्पूर्ण विश्व में छायी।

बीमारी की तो अब तक,
कोई दवा नहीं बन पाई,
उसके संग-संग ही अब तो,
चहुँ ओर बेरोजगारी भी छायी।

इस वैश्विक विपदा में,
अब बेबस है वर्तमान,
बहुतों का छीना रोजगार,
बहुतों का छिन गया काम।

घर में कैद होकर बैठे,
अब नहीं रहा कोई काम,
घर में ही बीमार हो रहे,
सुन सुन विपदा का नाम।

जन-जन हाथ पसारे माँग रहा,
भोजन, सेवा और इलाज,
सारी दुनिया ढूँढ़ रही,
हो कैसे-किस क्षण? इसका इलाज।

शत्-शत् नमन करूँ उनको,
जो जन इस विपदा में,
दे रहे हैं भूखों को भोजन,
कर रहे हैं ड्यूटी, सेवा और इलाज।

-अजय कुमार वर्मा

कुछ ऐसे लोभी जन भी होते,
जो बाहर से तो उज्ज्वल दिखते,
पर विपदा को व्यापार मानकर,
बेईमानी से माल कमाते।

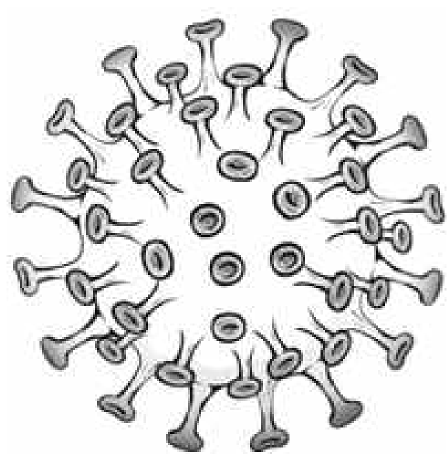
नमन करूँ उन असंख्य,
बेबस, निर्धन, वीरों को भी,
जो हफ्तों पैदल चलकर,
अपनी कुटिया वापस आ पाये।
धन्य-धन्य हैं वो जन,
जो छोटे-बड़े साधनों से,
आराम से अपने-अपने,
घर वापस आये।

विपदा की तो यही लीला होती,
कि किसी को उजाड़ देती,
किसी को सँवार देती,
किसी को एक रत्ती न छूती।

✦✦✦✦✦

27

कोरोना



आयी है ये कैसी त्रासदी,
जो न आँखों से दिख रही,
न कुछ हलचल कर रही,
न ही राजा और रंक में,
कोई भेद कर रही,
बस अदृश्य रूप में ही,
सब पर है आघात कर रही।

वर्तमान त्रासदी,
दम्भी धारणाओं की,
है पोल खोल रही,

अभोज्य को भी भोज्य,
बनाने का परिणाम बता रही,
प्रकृति की व्यवस्थाओं में,
न कोई तर्क-वितर्क छोड़ रही,
बस प्राकृतिक व्यवस्था अनुरूप,
चलने का है संदेश दे रही।

इस कठिन घड़ी में,
इसके सम्मुख, तकनीकी विकास भी,
अब लाचार दिख रहा।
निराशा के दौर में,
न कोई सन्त, पादरी
न मौलवी दिख रहा,
न कोई जादू टोना ही
अपना जादू दिखा रहा।
अब तो बस,
घर में ही रहके,
या बाहर दूर-दूर रहके
इससे लड़ने का,
एक उपाय दिख रहा।

✦✦✦✦✦

28

भ्रष्टाचार



डाकुओं ने भी डेरे बदल दिये,
जंगलों से पाक डेरों में आ गये।
डाकू से अब माननीय बन गये,
इस वेष में उनके हर ऐब छिप गये,
चमक-दमक व हनक दिखाना,
इनका प्रमुख काज हो गया।
अब तो सरकारी महकमों में भी,
भ्रष्टाचार का राज हो गया।
अदालतों का हाल तो फरियादी ही जानता,
कि वहाँ किस भांति कौन-कौन है लूटता।

थानों का हाल तो जन-जन है जानता
असली रामराज्य तो वहीं है दिखता।
अस्पतालों का हाल तो मरीज जानता,
कि वहाँ का भगवान किस भाँति लूटता।
शिक्षा का क्षेत्र तो व्यवसाय बन गया,
जिसका भी बच्चा पढ़ता बेहाल हो गया।
डकैत तो पुलिस से है बचके लूटता,
घूसखोर तो पुलिस के घेरे में लूटता।
डकैत जितना अपनी बन्दूक से न लूटता
घूसखोर उससे ज्यादा कलम से लूटता।
जैसे बाज कबूतर का है पंख नोचता,
वैसे ही घूसखोर फरियादी को नोचता।
खाकी, सफेद, काला
सब एक हो गया।
न बचा कोई क्षेत्र, हर जगह
भ्रष्टाचार का राज हो गया।
अब तो घूस देकर ही
यदि किसी का काम हो गया,
तो बार-बार कहता कि
उसने गंगा नहा लिया।

✦✦✦✦✦

29

महात्मा गाँधी



सन् अठ्ठारह सौ उनहत्तर में,
जब दो अक्टूबर आया,
शहर पोरबन्दर,
करमचन्द गाँधी के घर,
पुतली माँ ने एक बालक जाया।
उस बालक का नाम
मोहनदास करमचन्द गाँधी धरवाया।
आगे चलकर वह मोहन ही,
गाँधी–बापू कहलाया।

बापू दुबले-पतले थे,
पर दिन-दिन भर पैदल चलते थे,
फिर भी वह न थकते थे,
देख के उनकी चाल में तेजी,
आँधी भी शर्माती थी
भारत को आजाद कराने खातिर
उनको नींद न आती थी।
वह जिस-जिस रस्ता जाते थे,
हजारों जन जुड़ जाते थे,
पीछे चलने वालों में,
ज्यादातर जन ऐसे होते थे,
जिनके तन में,
न तो ढंग के कपड़े होते,
न ही पैरों में जूते-चप्पल होते थे
पर हर मौसम में,
बापू की ही रफ्तार में चलते थे।

चलकर सत्य-अहिंसा के पथ पर,
क्षमा, कर्म के भाव जगाकर,
सबके आगे माथ झुकाकर,
ऊँच-नीच का भेद मिटाकर,
बापू ने सबको प्यार दिया।
धोती वाले बाबा ने,
सत्य-अहिंसा के बल पर,
ऐसी लड़ी लड़ाई थी,
कि सत्य अहिंसा के आगे,

बन्दूकें भी शर्मायी थीं।
अंगरेजों भारत छोड़ो,
भारत छोड़ो,
चहुं ओर यही स्वर उठता था,
भारत के हर कोने से,
बापू का नाम उछलता था।
सत्य-अहिंसा के आगे,
तोपों की हिम्मत हार गयी,
इस देश की जनता जीत गयी,
भारत की किस्मत जाग गयी।
यह देश हमेशा याद करेगा,
बापू के बलिदान को।

✦✦✦✦✦

30

उद्धार



खनिज, वनस्पति व प्राणी,
सब में कुछ न कुछ गुण होता।
जिसने अपना गुण पहचान लिया,
जग में उसको मान मिला।
जिस चीज की कीमत कम होती,
एक दिन कूड़े के ढेर में होती।
जिस चीज की कीमत ज्यादा होती,
बड़ी जतन से रखी जाती।
जिस जन ने अपनी कीमत जितनी आँकी,
औरों ने उससे कुछ कम आँकी।

-अजय कुमार वर्मा

रोने वाले की कीमत तो,
यों ही कम हो जाती।
जिसने निज की गुरुता को भाव दिया,
गुरुता को उसकी भाव मिला।
जिसने निज को न मान दिया,
जग ने भी न उसको मान दिया।
है जग में एक ही जन ऐसा,
जो कर सकता है उद्धार तुम्हारा।
वो कोई और नहीं
वो खुद तुम हो, तुम हो, तुम हो।

✦✦✦✦✦

31

दुनिया की रीति



दुनिया की रीति रही है,
अब भी रीति वही है,
कि सब हुए अपरिचित धूप में,
जो संग चले थे छाँव में।

गैरों की क्या बात करें,
संकट के क्षण आने पर,
अपने जन भी बन जाते अनजानें,
क्योंकि दुनिया की रीति यही है।

-अजय कुमार वर्मा

आ जाए कभी विपरीत परिस्थिति,
तो मन में न रखना बोझ कोई,
ले लेना वृक्षों से सीख,
क्योंकि उनकी रीति अलग है।

वे तो खुद रहते धूप में,
औरों को देते छाँव,
जब तक उनमें जीवन रहता,
बिन उपहार खुशी से यूँ ही,
कुछ न कुछ देते रहते,
क्योंकि उनकी रीति यही है।

संकट के क्षण उन पर भी आते हैं,
आँधी तूफा आने पर,
धरती भी देती छोड़,
उनकी जड़ों का साथ,
डाली भी देती छोड़,
अपने तना का साथ।
फल-फूल भी देते छोड़,
अपनी डाली का साथ,
ऐसा संकट आने पर भी,
वो धीरज न खोते,
खण्ड-खण्ड हो जाने पर भी,
वो उपयोगी रहते,
क्योंकि उनकी रीति यही है।

आ जाये कभी संकट जीवन में,
तो तुम भी रखना धैर्य,
जब तक तन में साँस रहे,
हाथों में रहे शक्ति,
देते रहना सबको छाँव,
रहना वृक्षों की तरह उपयोगी,
वृक्षों की तरह उपयोगी।

जब जीवन की नैया डगमगाने लगे
सन्देशा आने लगे,
तो जाने से पहले
कर जाना एक और उपकार
करके अंगों का दान,
करके अंगों का दान।

✦✦✦✦✦

संक्षिप्त परिचय



अजय कुमार वर्मा

जन्म स्थान : ग्राम व पोस्ट – धमना खुर्द, जनपद – फतेहपुर (उ0प्र0)

वर्तमान निवास : शिव विहार, जानकीपुरम, लखनऊ, मो0 : 9450300827

जन्म तिथि : 07 अगस्त 1960

शिक्षा : निज ग्राम स्थित प्रा0 पा0 से कक्षा 5 तक, सर्वोदय मा0 विद्यालय सवाईपुर से कक्षा 8 तक, जनप्रिय हा0 से0 स्कूल, असधना से हाई स्कूल, श्री आस्तीक मुनि इं0 कॉ0 कोरिया, जनपद कानपुर से इण्टरमीडिएट तथा उच्च शिक्षा (बी.ए. एवं एल.एल.बी.), कानपुर विश्व विद्यालय कानपुर से प्राप्त की।

कार्यक्षेत्र : 1995 से कार्यालय लोक आयुक्त, उ0प्र0, लखनऊ में विभिन्न पदों पर रहते हुए 31 अगस्त 2020 को उपसचिव पद से सेवा निवृत्त।

रूचियाँ : लेखन, सामाजिक सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण



लॉकडाउन-काव्यांजलि